पुरस्कार

चित्रांकन तापस गुहा

लेखक जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद हिन्दी के महान कवि होने के साथ-साथ एक महान कलाकार, नाटककार और उपन्यासकार भी थे। उनका जन्म काशी के एक सम्पन्न घराने में हुआ। प्रसाद जी बहुत ही शील स्वभाव वाले, मधुर मितभाषी व्यक्ति थे। अपनी व्यवहारिक बुद्धिमत्ता के कारण वे सबके प्रिय थे। संवेदनशील होने के कारण समाज के उसूलों पर सवाल उठाना उनके लिए कोई अनोखी बात नहीं थी। किसी भी मत को वह अंतिम नहीं मानते थे। इन्हीं गुणों के कारण उनकी कहानियों ने भी साहित्य में विशेष स्थान पाया।

पुरस्कार कहानी में भी उनकी यही विचारधाराएँ झलकती दिखाई देती हैं।

बरसात का मौसम । आकाश में काले-काले बादलों की घुमड़ । बिजली की गड़गड़ाहट । ज़ोर से हवा चली और कुछ बूँदें बरसीं । जयघोष के बीच महाराज की सवारी आई ।

आज कोशल देश में कृषि-उत्सव मनाया जा रहा था ।

इस दिन महाराज को एक दिन के लिए किसान बनना पड़ता था। ज़मीन के एक चुने हुए टुकड़े में वे हल चलाते। फिर बीज बोते थे।

ज़मीन के असली मालिक को ज़मीन की चार गुणा रकम देते थे। और खेत राजा के हो जाते थे।

उस साल मधूलिका की ज़मीन चुनी गई थी। कोशल के सभी निवासी उसकी ज़मीन पर जमा हो रहे थे।

राजा सवारी से उतरे। सुन्दर लड़कियों ने मंगलगान गाया। पंडितों ने मंत्र पढ़े। फिर राजा ने ज़मीन पर हल चलाना शुरू किया। लोगों ने फूल और खील बरसाये।

कोशल का यह उत्सव दूर-दूर तक मशहूर था।

इसमें भाग लेने के लिए दूसरे राज्यों से भी लोग आते थे। उस साल मगध का राजकुमार अरुण आया था।

हल चलाने के बाद राजा को बीज बोना था। थाल में बीज उठाये मधूलिका राजा के साथ चल रही थी। सब लोग राजा को देख रहे थे। लेकिन अरुण मधूलिका को !

राजा ने धीरे-धीरे सारे बीज बो दिये। थाल खाली हो गया। राजा ने उसमें कुछ सोने के सिक्के डाल दिये। यह ज़मीन की कीमत थी।

मधूलिका ने थाली को प्रणाम किया। फिर सिक्के उठाकर राजा पर वार दिए। और कहा, 'महाराज! यह मेरे बाप-दादा की ज़मीन है। मैं इसे ऐसे ही आप को देने को तैयार हूँ। पर बेचूँगी नहीं।'

यह सुनते ही बूढ़े मंत्री चीखे, 'नासमझ! राजा की कृपा का अपमान मत कर। आज से तू राज्य की सुरक्षा में है। इसे अपना भाग्य समझ।'

राजा ने पूछा, 'कौन है यह लड़की ?'

'महाराज ! यह वीर सिंहमित्र की बेटी है । सिंहमित्र जिसने वाराणासी की लड़ाई में कोशल को मगध से बचाया था ।'

राजा कुछ सोचने लगे। फिर बिना कुछ कहे अपने शिविर की ओर लौट गये ।

जयघोष के साथ उत्सव पूरा हुआ ।

रात हुई पर राजकुमार अरुण की आँखों में नींद कहाँ ? अपने घोड़े पर सवार वह बाहर निकल पड़ा। घूमते-घूमते एक बरगद के पेड़ के पास पहुँचा।

पेड़ के नीचे, हाथ पर सिर रखकर मधूलिका सो रही थी। सोई हुई मधुलिका बहुत ही सुंदर और भोली जान पड़ती थी ! अरुण चुपचाप, एकटक उसे देख रहा था।

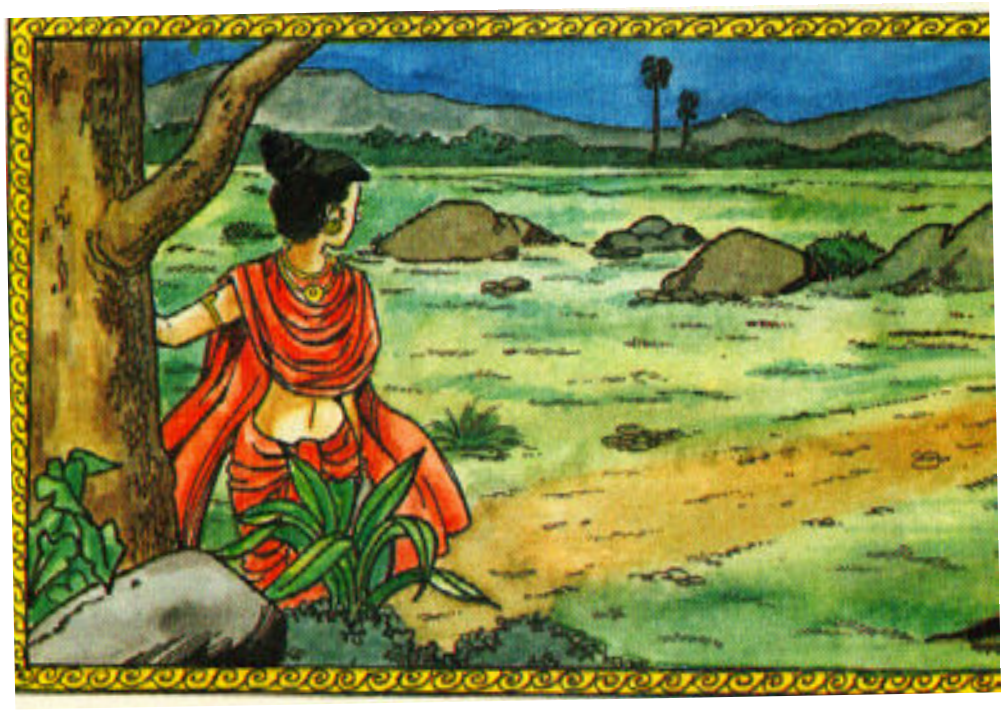

अचानक कोयल बोल उठी। मधूलिका की नींद टूटी। सामने एक अपरिचित को देख वह उठ बैठी।

अरुण बोला, 'मैं मगध का राजकुमार हूँ। आज सुबह तुम्हें उत्सव में देखा था। तभी से तुम्हारे साहस और सुंदरता का पुजारी बन गया हूँ।'

'मज़ाक न करो, राजकुमार। मैं आज बहुत दुखी हूँ। मेरा अपमान न करके मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो,' कहकर मधूलिका वहाँ से चल दी।

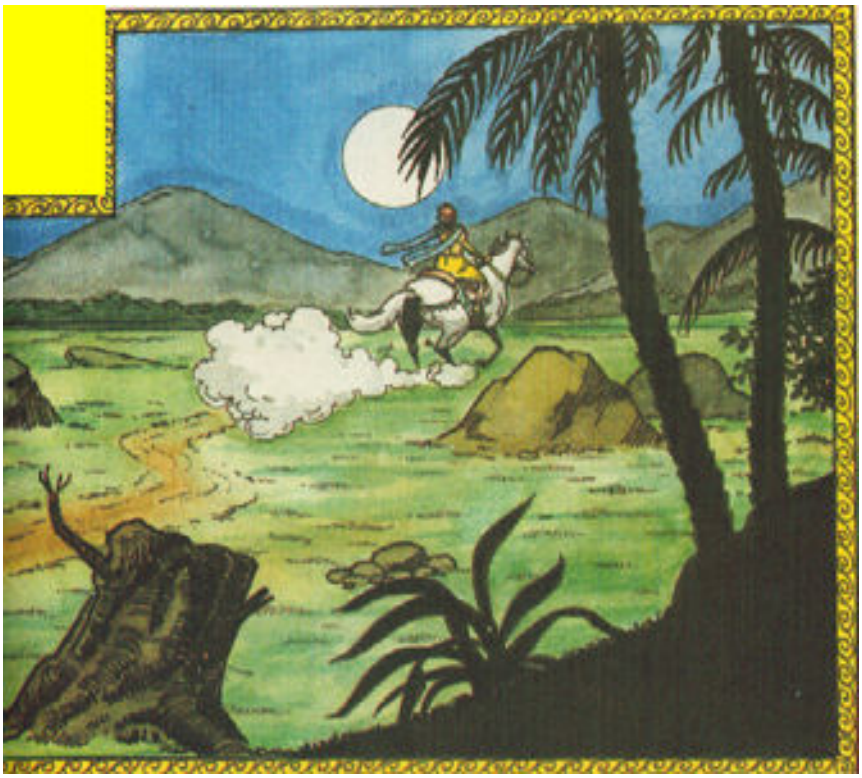

चोट खाकर राजकुमार लौट गया। मधूलिका कुछ देर तक उड़ती हुई धूल को देखती रही। आँखों में आँसू आ गये।

मन ही मन मधूलिका ने जीवन को एक नए सिरे से शुरू करने का निश्चय किया।

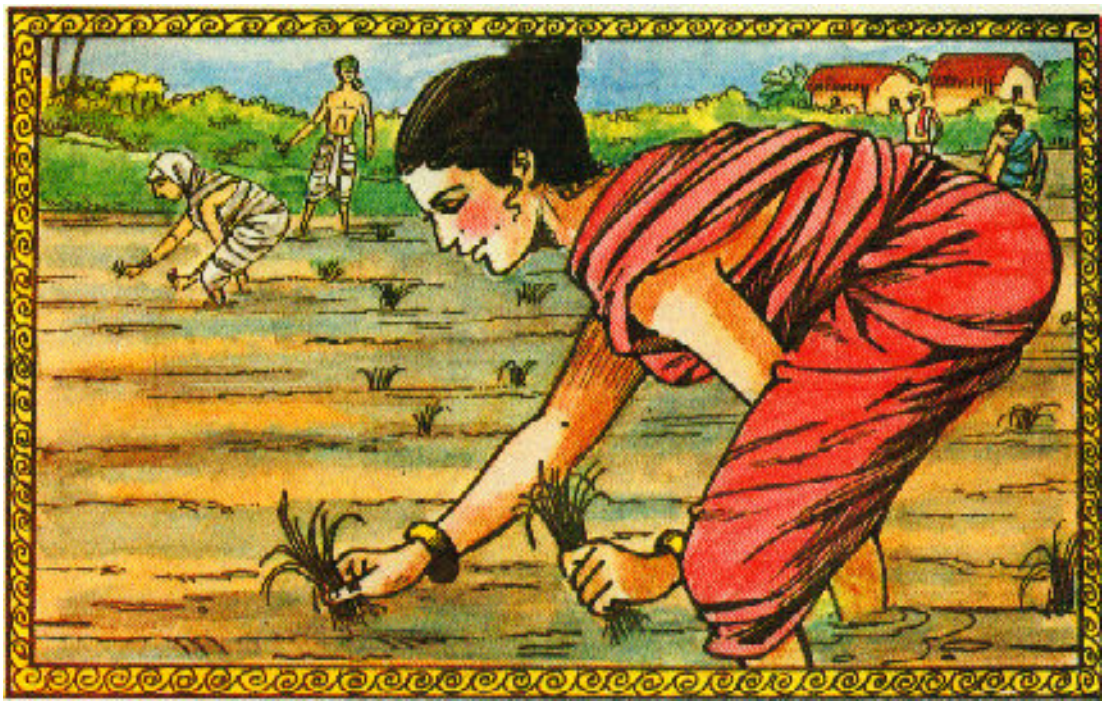

अपनी ज़मीन खोकर मधूलिका दूसरे के खेतों में कड़ी मेहनत करने लगी। रूखा-सूखा जो मिलता खाकर अपनी झोंपड़ी में सो जाती।

इस तरह तीन साल बीत गये।

सर्दियों की एक रात। मेघों से भरा आकाश। रह-रहकर बिजली चमक उठती थी। मधूलिका अपनी झोंपड़ी में बैठी ठिठुर रही थी। आज बहुत दिनों बाद उसे बीती हुई वह बात याद आई। राजकुमार अरुण की प्यार-भरी बातें! अब उसे दुख हो रहा था - उसे अरुण की बात मान लेनी चाहिए थी!

तभी, दरवाज़े पर खट-खट हुई। 'कौन है यहाँ? राही को शरण चाहिए,' बाहर से आवाज़ आई।

दरवाज़ा खोलते ही बिजली चमकी। मधूलिका चिल्ला उठी, 'राजकुमार !' अरुण भी उसे देखकर हैरान था। कुछ रुक कर बोला, 'मैं बाग़ी हूँ। मुझे मगध से निकाल दिया गया है। मैं कोशल में रहने आया हूँ।'

मधूलिका हँस कर बोली, 'आपका स्वागत है।'

बारिश बंद हो चुकी थी। कोहरे से धुली हुई चाँदनी में अरुण और मधूलिका बरगद के पेड़ के नीचे जा बैठे। मधूलिका आज बहुत खुश थी। अरुण कुछ संभल-संभल कर बातें कर रहा था।

'मैं नया राज्य स्थापित करूँगा। तुम्हें राजरानी बनाऊँगा। तुम मझसे प्यार करती हो न, मधूलिके!' अरुण ने उसके हाथों को दबाकर पूछा।

मधूलिका आज बहुत खुश थी। राजकुमार अरुण के पास बैठकर वह अपने सभी दुखों को भूल-सी गयी थी। सपनों की दुनिया में खोई थी मधूलिका जब अरुण बोला, 'नये राज्य की स्थापना करने में तुम्हें मेरी मदद करनी होगी।'

'जो कहोगे, वही करूँगी !' मधूलिका ने कहा।

और अरुण उसे अपनी योजना बताने लगा।

मधूलिका राजा से मिलने उनके महल में गई। महाराज को प्रणाम करके बोली, 'तीन बरस हुए देव ! मेरी ज़मीन खेती के लिए ली गई थी।'

'अच्छा तो तुम उसकी कीमत माँगने आई हो। बोलो, तुम्हें क्या चाहिए ?'

'मुझे किले के दक्षिणी नाले के पास अपने खेत के बराबर की ज़मीन चाहिए।'

राजा मान गए।

किले के दक्षिणी नाले के पास की ज़मीन सैनिक-महत्त्व रखती थी। वहाँ सैनिक किले पर पहरा देते थे। ज़मीन मधूलिका को मिल जाने के बाद सैनिक वहाँ से हटा लिए गये।

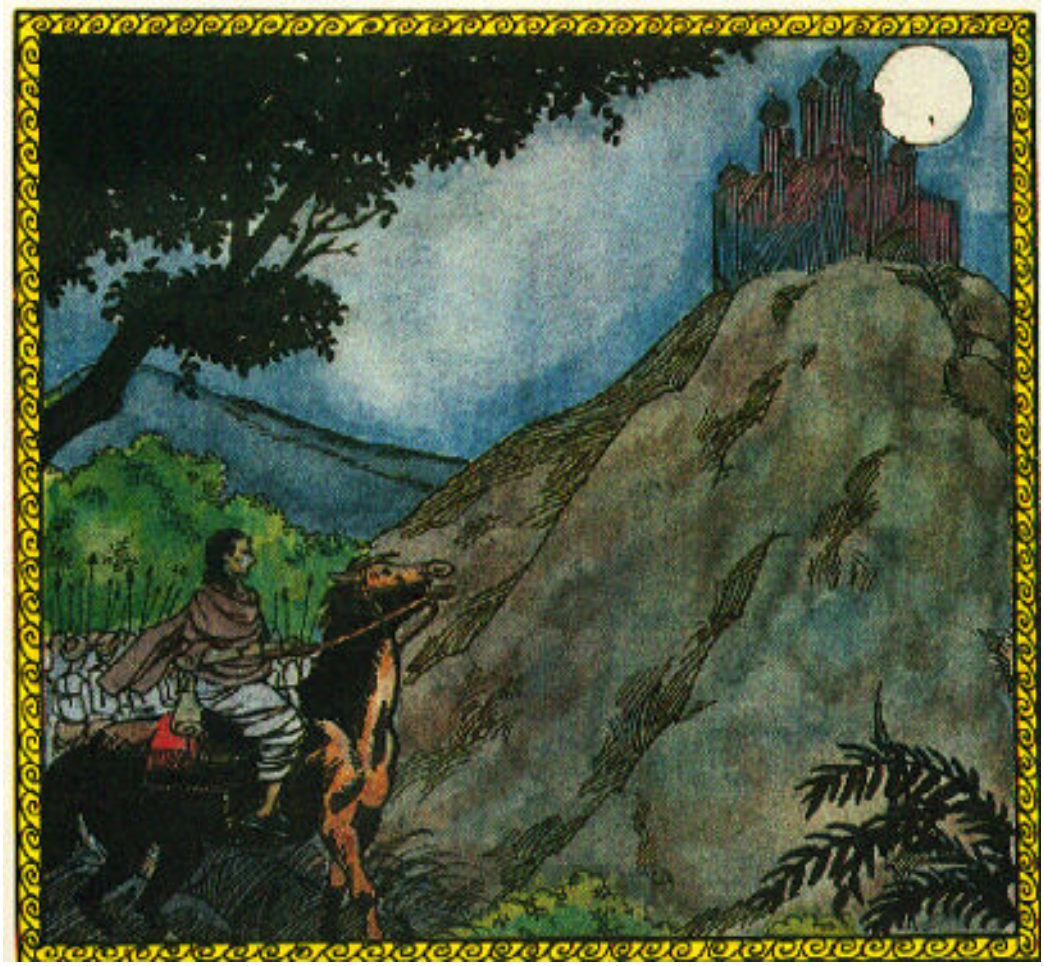

अरुण अपनी सैनिक-टुकड़ी के साथ घने जंगल में छुप गया। वह वहाँ से राजा के किले पर हमला करने वाला था। यही उसकी योजना थी।

मधूलिका का दिल उसे धिक्कार रहा था। 'मेरे पिता ने कोशल को बचाया था। उनकी बेटी होकर मैं दुश्मन की मदद कर रही हूँ। नहीं, कभी नहीं !'

यह सोचकर वह इधर-उधर भागने लगी। सामने से कोशल देश के सेनापति अपनी सैनिक-टुकड़ी के साथ आते हुए दिखाई दिये। वह उनके पैरों पर गिर पड़ी और बोली। 'आज रात किले पर चढ़ाई होगी। डाकू दक्षिणी नाले की ओर से आएँगे। जल्दी कुछ कीजिये।'

सैनिक दक्षिणी नाले की ओर भागे।

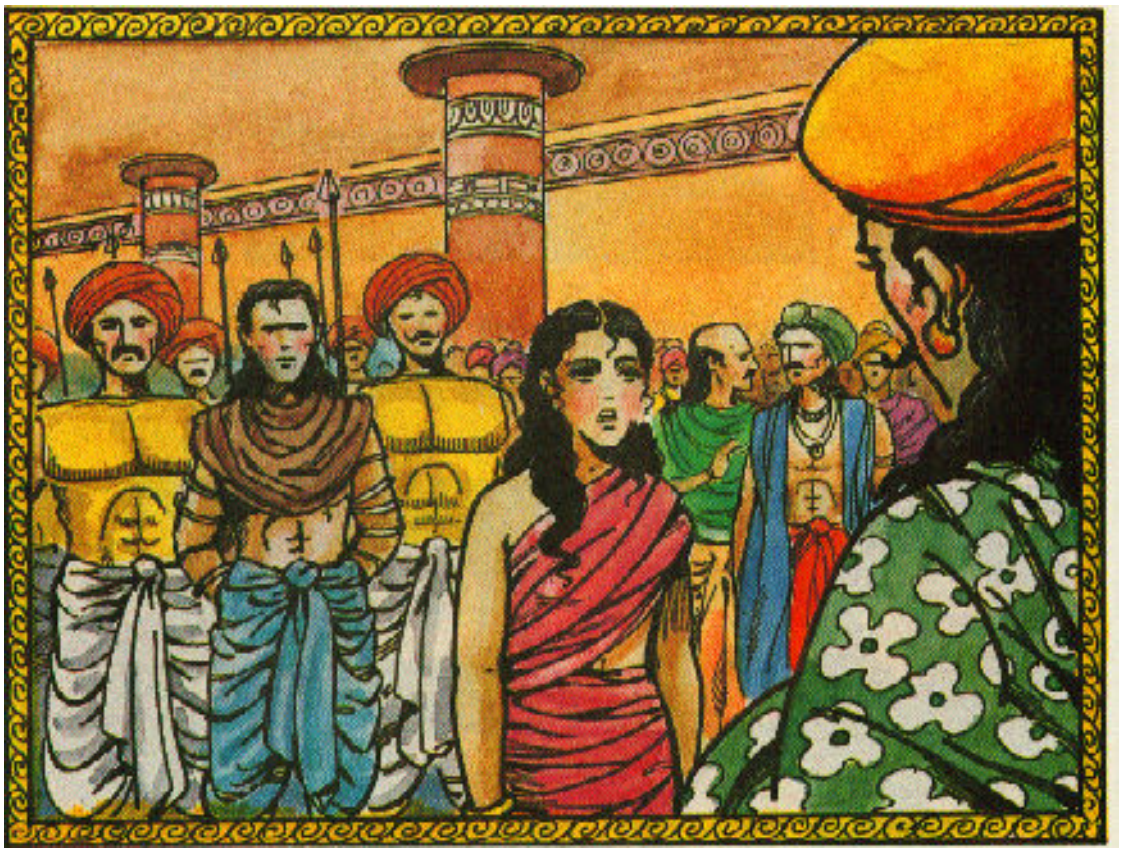

हमले की तैयारी करता हुआ अरुण पकड़ा गया।

इस तरह उस की योजना बेकार हो गई। उसे बंदी बना लिया गया। राजा ने उसे प्राण-दंड दिया।

फिर मधूलिका बुलाई गई। वह पागल-सी आकर खड़ी हो गई। राजा ने कहा, 'मधूलिका, मनचाहा पुरस्कार माँग।'

'मुझे भी प्राण-दंड मिले !' कहती हुई वह बंदी अरुण के पास जा खड़ी हुई।